THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

शुद्धता और सेहत का सम्बन्ध
The Connection between Purity and Health

ताज़गी, सम्पूर्णता, नवीनता – शब्द वर्णन करते हैं कि वास्तव में आप कौन हैं।?

Author – Jan Kassahn Keelar

Christian Science Sentinel Volume 101, No. 48, Nov. 29, 1999

शुद्ध जल। शुद्ध वायु। शुद्ध भोजन। ज्यादा से ज्यादा लोग शुद्धता को तलाश रहे हैं और महत्व दे रहे हैं। ऐसा होता था कि शब्द 'शुद्धता' ज्यादातर नैतिकता के साथ संबंधित था, परन्तु आज इसे हमारे जीवन के बहुत सारे पहलुओं में अनिवार्य माना जाता है, सेहत को सम्मिलित करते हुए। उदाहरण के तौर पर, कुछ लोग, अपने शरीर की शुद्धता पाने के लिए, व्यायाम घरों में जाकर, अशुद्धताओं को निकालना पसन्द करते हैं। दूसरे लोग अपनी प्रणालियों को जीव विषों (toxins) छूत (infection), वायरस और जोखिम में डालने वाले कीटाणुओं से मुक्त होने के लिए खास आहार इस्तेमाल करते हैं।

क्या वास्तव में शुद्धता और स्वास्थ्य में कोई सम्बन्ध है? मेरी एक सहेली ने यह पाया कि सम्बन्ध है। परन्तु यह आध्यात्मिक शुद्धता थी जिसने अन्तर लाया। लगभग दस वर्षों से वह मूत्राशय में छूत के रोग से पीड़ित थी, जब उसके शरीर में एक प्रतिजीवाणु (antibiotic) के लिए प्रतिरोध निर्मित हो जाता था, उसको दूसरा दिया जाता था, उस तकलीफ को ठीक करने की कोशिश में उसने छोटी सर्जरी भी करवाई थी। लगभग जो कुछ भी डाक्टरी तौर पर संभव था, किया जा चुका था।

तथापि, उसी समय वह, क्रिश्चियन सायँस की छात्रा बन रही थी। उसने मुझे बताया, "मैंने जाना कि यदि मैं इस तकलीफ को आध्यात्मिक तौर पर सम्बोधित न करती तो मैं बाकी की जिन्दगी इससे प्लेग-ग्रस्त हो जाती"।

एक शाम, जब वह खास तौर पर बेचैनी महसूस कर रही थी, उसने एक चिकित्सक को न बुलाने का फैसला किया, बल्कि इसकं बजाए एक क्रिश्चियन सायँस उपचारक को सहायता के लिए कहा। हालात जान लेने के बाद, उपचारक ने उसे बताया कि वह उसका क्रिश्चियन सायँस में उपचार करेगी और उसे फिर से एक घंटे के अंदर बात करने के लिए कहा।

जब उसने टेलीफोन रख दिया, मेरी सहेली हैरान थी, क्या असल में **परमेश्वर** इस बहुत पुराने छूत के रोग को इतनी शीघ्रता से संभाल सकता है। परन्तु उसने इस विचार को मान लिया कि वह कर सकता है, और तुरन्त ही उसने अधिक शान्ति, सुरक्षा महसूस की और **परमेश्वर** के प्रेम को महसूस किया। जब उसने

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

उपचारक से दोबारा बात की, उसने अच्छा खासा सुधार बताया, और उसके थोड़ी देर बाद एक पूर्ण और स्थायी रूप से उपचार हो गया। बाद में उपचारक ने बताया कि उसकी प्रार्थनाओं में मेरी सहेली की परमेश्वर की सन्तान होने के नाते उसकी परम निश्चित, निर्विवाद शुद्धता की पहचान सम्मिलित थी।

और शुद्धता का मेरी सहेली के उपचार के साथ क्या सम्बन्ध था? लोग, जो क्राईस्ट की सायँस से परिचित हैं वह परमेश्वर को दिव्य प्रेम* और पूर्ण रूप से अच्छा और शुद्ध जान लेना सीख जाते हैं। क्योंकि परमेश्वर, एक मात्र रचयिता ही सर्वस्व और पूर्ण रूप से अच्छा है, उसकी रचना में बुराई के लिए कोई स्थान नहीं। उसकी शुद्धता और अच्छाई सर्वव्याप्त है, और ये दूषित नहीं हो सकते।

आध्यात्मिक और सम्पूर्ण समन्वित रूप से परमेश्वर की रचना की शुद्धता एक तथ्य है । परमेश्वर का विरोध करने वाली कोई हस्ती नहीं है जो कि उसकी सम्पूर्णता को अशुद्धताओं से बदल दे। अशुद्धताओं की मात्र धारणा ही इस लिए उत्पन्न होती है क्योंकि, परमेश्वर की बेदाग और अच्छी सन्तान की तरह अच्छाई के बारे में हमारे मत त्रुटिपूर्ण हैं। परमेश्वर, दिव्य मन अपने आपको शुद्ध और सुन्दर विचारों में निरन्तर अभिव्यक्त करता है। मानव, परमेश्वर की अभिव्यक्ति के रूप में, उसकी शुद्धता, सम्पूर्णता और सेहत को प्रतिबिम्बित करता है। और यह निष्कंलक, आध्यात्मिक मानव की हमारी असली पहचान है।

जैसे मेरी सहेली ने उपचार अनुभव किया, जब शुद्धता के बारे में यह वैज्ञानिक तथ्य उस पर विशेष रूप से लागू किए गए, वैसे ही हम सब के लिए आश्चर्यजनक मुक्ति है, भौतिक रूप से और भावनात्मक रूप से जब हम इन आध्यात्मिक तथ्यों को समझ जाते हैं। अशुद्धियाँ–चाहे वह छूत (infection), दूषण (contamination), बीमारी या नैतिक कमजोरियाँ जैसे कि घृणा (स्व–घृणा सहित), रोष, बेईमानी, नाराजगी और चिन्ता की तरह प्रकट होती है–हमारे अस्तित्व के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखती। अशुद्धियाँ वास्तव में एक व्यक्ति के सच्चे स्वरूप का कभी भी कोई हिस्सा नही होती और वह किसी की परमेश्वर द्वारा दी गई शान्ति और सेहत पर धावा बोलने के लिए शक्तिहीन होती हैं।

क्रिश्चियन साँयस की खोजकर्त्ती और संस्थापिका, मेरी बेकर एडी, उस उपचार से, जो कि अपनी जिन्दगियों की एक अशुद्ध समझ को मिटाने और अपने को परमेश्वर के शुद्ध और सम्पूर्ण विचार मानने का परिणाम है, गहन रूप से परिचित थी। सायँस एण्ड हैल्थ विद् की टू दॅ स्क्रिपर्चस में वह लिखती हैं, ''सम्पूर्णता वास्तविकता का आधार होती है। सम्पूर्णता के बिना, कुछ भी पूर्णतः वास्तविक नहीं– – – – – –, जब हम जान जाते हैं कि भूल वास्तविक नहीं है, हम विकास के लिए तैयार हो जाऐंगें, उन चीजों को भूलते हुए जो कि पीछे रह जाती हैं।'' (पृष्ठ 353)

यदि हम नश्वर इतिहास की तरफ देखने के लिए जिद करते हैं, और इससे संबंधित हर एक चीज को मान रहे हैं जिसनें आज जो हम हैं, उसे बनाने में सहयोग दिया है, तब हमारी जिन्दगियों को रूप (बल्कि विरूप) दिया जायेगा, ऐसी किसी अशुद्धियों को बल और शक्ति देने से जो कि हमारे अनुभव में घटित हुई दिखाई देती हो। इसके बजाय, हमें अपना ध्यान–परमेश्वर की शुद्ध अच्छाई और इस तथ्य की ओर देना चाहिए कि यह अच्छाई और आध्यात्मिकता हम में से हर एक में निहित है, क्योंकि परमेश्वर, दिव्य आत्मा मानव का स्त्रोत है।

जब हम न केवल मानते हैं बल्कि हमारी जिन्दगियों को हमारा असली आध्यात्मिक स्वभाव अभिव्यक्त करने देते हैं, विचार में यह बदलाव असली निर्मलता लाता है। एक तरह का नया जन्म, यह मन मुटावों, दोष और हठ को निकाल फैंकता है, और हमें स्वंय को आध्यात्मिक, निष्कलंक और निर्दोष देखने में सक्षम बनाता

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

है। ऐसी प्रार्थना न केवल हमारी स्वयं की जिन्दगियों का सुधार करती है, बल्कि इसका प्रभाव हम से भी परे दूसरों को उनकी परमेश्वर से दी गई शुद्धता को खोजने के लिए भी पहुँचता है।

यदि हम सोच रहे हैं कि हमने अपनी शुद्धता को खो दिया है और इसे दोबारा प्राप्त नहीं कर सकते, जीसस की एक नीति–कथा में उपचार करने वाला और आशावादी संदेश है। पापियों और धर्म प्रचारकों के एक मिले जुले समूह से एक ही तरह की बात करते हुए उन्होंने कहा, ''ऐसी कौन सी स्त्री होगी जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हों, एक सिक्का खोने पर, मोमबत्ती नहीं जलाती, और घर की सफाई नहीं करती और मन लगाकर नहीं ढूंढती, जब तक वह उसे पा नहीं लेती? जब वह पा लेती है तब वह अपनी सखियों और अपनी पड़ोसनों को इक्ट्ठा करके कहती है, मेरे साथ खुशी मनाओ, क्योंकि मुझे सिक्का मिल गया है, जो कि मैंने खो दिया था।'' (लूका 15:8,9)

एक बार मैंने एक लैक्चरार को इस–नीति कथा को आध्यात्मिक शुद्धता के साथ जोड़ते हुए सुना। वक्ता ने समझाया कि स्त्री ने वास्तव में चाँदी के सिक्के को खोया नहीं था, वह उसकी निगाहों से ओझल हो गया था। यह तो सारा समय उसके घर में ही था। यही शुद्धता के लिए भी सच है। हम शायद सोचते हैं हमने इसको खो दिया है, शायाद हमारी तुच्छ परख और गलत व्यवहार के कारण, या क्योंकि हम किसी तरह से दूषित महसूस करते हैं उदाहरणतः बीमारी के कारण। परन्तु तथ्य यह है कि हमारी शुद्धता अखंड है क्योंकि यह एक अपरिवर्तनीय शुद्ध स्त्रोत से आती है; यह केवल हमारी नजरों से ओझल हो जाती है। आध्यात्मिक शुद्धता हमेशा हमारी है, हमारे ''घर'' या चेतना में हमेशा रहती है। और हम इसकी उपस्थिति के प्रति दोबारा सचेत हो सकते हैं।

जैसे कि स्त्री को मोमबत्ती के प्रकाश की जरूरत थी, इसी तरह हमें चेतना में क्राईस्ट, सत्य के प्रकाश को लाना चाहिए। यह आध्यात्मिक प्रकाश हमें स्वयं को परमेश्वर रचित देखने में सक्षम बनाता है और वह हमें जानता है– उसके शुद्ध, सम्पूर्ण रूप की तरह। बेशक, हमें काम तो करना ही पड़ेगा। स्त्री को सिक्का ढूँढने के लिए अपने घर की सफाई करनी पड़ी थी। इस तरह हमे अशुद्ध और सीमित विचारों की अपने मानसिक घर में से सफाई करने की जरूरत है।

बाइबल के अनुप्राणित संदेश से अधिक अच्छी तरह से परिचित हो जाने पर मेरी बेकर एड़ी की रचनाओं का अन्वेषण करने से हमारे प्रयास और बढ़ते जाएंगे, यह जानने के लिए कि हम परमेश्वर के रूप की तरह कौन हैं? साथ ही, यह जान कर बहुत खुशी होती है कि जब स्त्री को उसका चाँदी का सिक्का मिला, उसका मूल्य जरा भी कम नहीं हुआ था। यह पूर्णतः क्षतिहीन था। इसी तरह, जब हम अपने सच्चे आत्मत्व को परमेश्वर के बच्चे की तरह खोज लेते हैं, हम देखेंगे कि हमारी निष्कपटता, हमारी शुद्धता, कभी भी दूषित या बिगड़ने वाली नहीं थी। यह पूर्णतः क्षतिहीन है।

फिर खुशी मनाने और उत्सव मनाने का अच्छा कारण है–शुद्ध अदूषित तुम।

Translation © 2009 The Christian Science Publishing Society. This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.